कला एवं शिल्प महाविद्यालय
पटना विश्वविद्यालय, पटना

ई–कंटेंट – बी.एफ.ए. 4 सेमेस्टर
डॉ0 राखी कुमारी
सहायक प्राध्यापिका (छापाकला)

रामकिंकर

शांतिनिकेतन में 'किंकर दा' नाम से प्रसिद्ध रामकिंकर बैज का जन्म सन् 1910 में बंगाल राज्य के "बाँकुरा" शहर के पास जुग्गीपाड़ा गाँव में हुआ था। इनकी आरम्भिक शिक्षा "बाँकुरा" शहर में हुआ, वही पर इनमें कला के प्रति रूची जाग्रत हुई। इनकी प्रतिभा सर्वप्रथम सन् 1925 ई0 में "मार्डन रिव्यू" के संस्थापक रमानंद चटर्जी ने पहचाना और कला की शिक्षा हेतु शान्तिनिकेतन के कला भवन में भेजा, जहाँ नन्दलाल बसु जैसे कला–विशेषज्ञ के सान्निध्य में इन्होंने कला शिक्षा ग्रहण की।

रामकिंकर को मूर्त्तिकार के रूप में लोग जानते है, परन्तु मूत्तिकला के साथ–साथ चित्रकला और छापाकला में भी इन्होंने कार्य किये। इन सभी विधाओं का पूर्ण विकास उन्होंने अपने स्वभाव अनुसार किये। प्रारम्भ से ही इनको सभी विधाओं में झुकाव था। इनकी प्रतिमाओं के गठन में, शरीर रचना, अनुपात अंग–प्रत्यग के उभार, सुस्पष्ट गठन एवं उनकी स्थितिजन्य लघुता एवं दीर्घता के अनुसार एक सुनियोजित विशेषता है।

रामकिंकर बैज ने आरम्भ में लघु चित्र बनायें किन्तु शीघ्र ही उन्होंने छापाकला द्वारा अनेक चित्रों की रचना की। इनके छापाचित्रों में शास्त्रीय कला तथा लोककला का समन्वय मिलता है। उनकी कृतियों में जीवन के सौन्दर्य, पूर्णता आस्था तथा दृढ़विश्वास की छाप है। उन्होंने दैनिक जीवन के विषयों को तूलिका रेखाचित्रों, ब्रश एवं ड्राइग्स के द्वारा अंकित किये है।

बैज ने अपनी प्रथम एकल प्रदर्शनी सन् 1942 ई0 में नई दिल्ली में आयोजित की। अन्य प्रदर्शनियॉ 1950–51 में इंडियन सोसायटी ऑफ ओरिएण्टल आर्ट, कलकत्ता में 1950–51 ई0 में 'रियेलिटीज नूवेल' पेरिस में और 'एसियन कला प्रदर्शनी' टोक्यों में हुई।

बैज सन् 1976 में केन्द्रीय ललित कला अकादमी के फैलो निर्वाचित हुये। रियेलिजीट नूवेल, पेरिस तथा 'इंडियन स्कल्पचर्स ऐसोसियेशन' कलकत्ता के सदस्य भी रहे। बैज 57 साल से अधिक शान्तिनिकेतन में रहे और तीन दशकों तक वे कला भवन के विशिष्ट सदस्या भी रहे है। इनके प्रसिद्ध चित्रों में 'सुजाता','कन्या तथा कुत्ता' 'अनाज की ओसाई' विशेष प्रसिद्ध हैं।

01 अगस्त सन् 1980 ई0 को इस महान कलाकार का निधन हो गया।

संदर्भ

1. भारतीय चित्रकला एवं मूर्त्तिकला का इतिहास 'डॉ0 रीता प्रताप' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

2. भारतीय छापाचित्र कला आदि से आधुनिक काल तक 'डॉ0 सुनील कुमार' भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली